

<p>तारीख हुक्म</p>	<p>हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज रेफरेन्स/एलआर/3078/2005/नागौर सरकार बनाम सोहनदास वगैरहा</p>	<p>नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तामील में जारी हुए</p>
	<p style="text-align: center;">एकल पीठ श्री प्रवीण गुप्ता, सदस्य</p> <p>उपस्थित- श्री राजेन्द्र प्रसाद मीणा, उपराजकीय अधिवक्ता सरकार। अप्रार्थीगण अनुपस्थित, अतः उनके विरुद्ध एकतरफा कार्यवाही।</p> <p style="text-align: center;">निर्णय</p> <p style="text-align: right;">दिनांक:- 27-11-2019</p> <p>यह रेफरेन्स अन्तर्गत धारा 82 राजस्थान भू राजस्व अधिनियम, 1956 के तहत निदेशक भू अभिलेख राजस्व मण्डल राजस्थान अजमेर के आदेश दिनांक 30-5-2005 के द्वारा राजस्व मण्डल को प्रेषित किया गया है।</p> <p>संक्षेप में प्रकरण के तथ्य इस प्रकार है कि अतिरिक्त जिला कलक्टर नागौर के समक्ष तहसीलदार जायल ने एक रेफरेंस प्रार्थना पत्र इस आशय के साथ पेश किया कि रेफरेंस प्रकरण में लिप्त विवादित आराजियात बाबत मौजा धानणी के कुल किता 11 रकबा 609-5 बीघा भूमि मिसल बंदोबस्त सम्वत् 2006 में डोली बनाम मंदिर श्रीरुघनाथजी बहतमाम पुजारी श्री हुकमीराम बेटा पोकरदास, आधाराम पुत्र धनाराम साद सा. धानणी के नाम दर्ज थी, जिसमें हाल खसरा संख्या 373 रकबा 2-14 बीघा व खसरा संख्या 375 रकबा 90-10 बीघा अप्रार्थीगण सोहनलाल वगैरहा के व खसरा संख्या 331, 332, 175, 329/1 व 10 की कुल भूमि 131-12 बीघा सम्वत् 2020 में सेटलमेंट विभाग द्वारा लिछमणदास के नाम खातेदारी में दर्ज कर दी। अतिरिक्त जिला कलक्टर नागौर ने उक्त रेफरेंस का विचारण करते हुए आदेश दिनांक 15-11-1996 पारित करते हुए मामले को आयुक्त भू प्रबन्ध राज. जयपुर के समक्ष प्रेषित किया।</p>	

. तारीख हुक्म	हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज रेफरेन्स/एलआर/3078/2005/नागौर सरकार बनाम सोहनदास वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तामील में जारी हुए
	<p>आयुक्त भू प्रबन्ध राज. जयपुर ने उक्त रेफरेंस की कार्यवाही में आदेश दिनांक 11-5-1999 पारित करते हुए आलोच्य प्रकरण को निदेशक भू अभिलेख राजस्व मण्डल को प्रेषित किया। उक्त आदेश के अनुसरण में निदेशक भू अभिलेख राजस्व मण्डल अजमेर ने मामले में विचारण करते हुए विवेचित किया कि डोली बनाम मंदिर श्रीरुघनाथजी की आराजी को अप्रार्थीगण के नाम से हटाया जाकर मूर्ति मंदिर के नाम किए जाने बाबत आदेशिका दिनांक 30-5-2005 पारित करते हुए मण्डल के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।</p> <p>हमने विद्वान उपराजकीय अधिवक्ता की रेफरेंस के सम्बन्ध में एकपक्षीय बहस सुनी।</p> <p>विद्वान उपराजकीय अधिवक्ता ने बहस में कथन किया कि हस्तगत मामले में माफी मंदिर की भूमि का हस्तान्तरण बिना किसी सक्षम आदेश के हुआ है जो अवैधानिक है, क्योंकि माफी मंदिर श्रीरुघनाथजी को शाश्वत नाबालिग माना गया है और इसकी भूमि पर किसी अन्य व्यक्ति को किसी प्रकार के खातेदारी अधिकार प्रोदभूत नहीं होते हैं। अन्त में उन्होंने रेफरेंस को स्वीकार कर विवादित भूमि को पुनः राजस्व रेकार्ड में पूर्ववर्ती श्रीरुघनाथजी वाके लालगढ के नाम दर्ज किए जाने की प्रार्थना की गई।</p> <p>हमने विद्वान उपराजकीय अधिवक्ता की एकपक्षीय बहस पर मनन किया। पत्रावली में प्रस्तुत रिकार्ड एवं अधीनस्थ न्यायालय द्वारा प्रेषित रेफरेन्स का अवलोकन किया गया।</p> <p>पत्रावली का आद्योपान्त अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि रेफरेंस प्रकरण में लिप्त विवादित आराजियात बाबत मौजा धानणी के कुल कित्ता 11 रकबा 609-5 बीघा भूमि मिसल बंदोबस्त सम्वत 2006 में डोली बनाम मंदिर श्रीरुघनाथजी बहतमाम पुजारी श्री हुकमीराम बेटा पोकरदास,</p>	

. तारीख हुक्म	हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज रेफरेन्स/एलआर/3078/2005/नागौर सरकार बनाम सोहनदास वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तामील में जारी हुए
	<p>आधाराम पुत्र धनाराम साद सा. धानणी के नाम दर्ज थी, जिसमें हाल खसरा संख्या 373 रकबा 2-14 बीघा व खसरा संख्या 375 रकबा 90-10 बीघा अप्रार्थीगण सोहनलाल वगैरहा के व खसरा संख्या 331, 332, 175, 329/1 व 10 की कुल भूमि 131-12 बीघा सम्वत 2020 में सेटलमेंट विभाग द्वारा लिखमणदास के नाम खातेदारी में दर्ज कर दी। अतः माफी मंदिर की भूमि का हस्तान्तरण बिना किसी सक्षम आदेश के हुआ है जो अवैधानिक है, क्योंकि माफी मंदिर श्रीरुघनाथजी को शाश्वत नाबालिग माना गया है और इसकी भूमि पर किसी अन्य व्यक्ति को किसी प्रकार के खातेदारी अधिकार प्रोदभूत नहीं होते है।</p> <p>-1984 आरआरडी पेज 01 में निम्न तीन बिन्दुओं पर अपना विनिश्चय दिया है:-</p> <p>(a) <u>Idol- Minor- R.T.Act, Secs. 5(25) Proviso & 46 (1)(e)</u>- Whether a deity is a minor for purpose of Sec. 46 and Proviso to Sec. 5 (25) or suffers from any mental or physical disability u/s 5(25) or incapable of cultivating land u/s 46 (1)(e)- Held deity is a minor for purpose of Sec 46(1)(a) and proviso to Sec. 5(25)- Question of infirmity and disabilities, not considered necessary to be examined since all minor enjoy protection u/s 46(1) (a).</p> <p>(b) <u>Raj. Tenancy Act. Ss. 46(1) & 16 (vi)</u> - Whether khatedari rights can at all accrue in lands held for public purpose and lands of deities can be considered to be held for public purpose- Held, properties endowed for an idol, essentially for public purpose and/ or public utility unless temple, essentially private- AIR 1957 SC 133, followed- Hence khatedari rights cannot accrue in such lands.</p> <p>(c) <u>Raj. Tenancy Act, Sec. 5 (25) Land cultivated personally</u>- Lands in muafi of deity, cultivated by a person, not being a pujari or manager, not a member of their family, nor a hired labour or servant- Held such land, included in definition of 'land cultivated personally' in sec 5(25).</p> <p>इसके अतिरिक्त 1994 आरआरडी पेज 01 रामप्रताप व अन्य बनाम राजस्व मण्डल में माननीय राजस्थान उच्च</p>	

. तारीख हुक्म	हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज रेफरेन्स/एलआर/3078/2005/नागौर सरकार बनाम सोहनदास वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तामील में जारी हुए
	<p>न्यायालय की खण्ड पीठ ने प्रतिपादित किया है कि:-</p> <p>"(B) Rajasthan Land Reforms & Resumption of Jagirs Act- (a) Section 2(i) and sub-section (23) of Section 5 of the Rajasthan Tenancy Act- When there was no provision in the law or in the proforma for preparation of the land records for the entry of the word 'khudkasht', the entry of merely the name of the khatedar in the column provided therefor (without the word 'khuddasht') did not detract from the 'khudkasht' nature of the tenure.</p> <p>(b) Section 2(k)- Land cultivated personally - It is settled law that an idol is a perpetual minor and, therefore, it is not expected to cultivate the land personally and in such a case, the land shall be deemed to be cultivated personally even in the absence of such personal supervision."</p> <p>प्रस्तुत मामले में न्यायिक दृष्टान्त 1984 आरआरडी पेज 01 एवं 1994 आरआरडी पेज 01 अवलोकनीय है, जिसमें प्रतिपादित किया गया है कि मूर्ति सदैव नाबालिग है तथा नाबालिग की भूमि पर जिसके द्वारा भी काशत की जाती है, वह मूर्ति द्वारा ही "Land cultivated personally" ही मानी जाएगी। राजस्व मण्डल की वृहद पीठ एवं माननीय राजस्थान उच्च न्यायालय के निर्णय में यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है कि मंदिर मूर्ति की भूमि पर अगर कोई अन्य व्यक्ति काशत करता है तो वह मंदिर मूर्ति के द्वारा ही काशत किया जाना माना जाएगा। फलतः मूर्ति मंदिर उन अपवादित श्रेणियों में शामिल है जिन पर राजस्थान काशतकारी अधिनियम की धारा 46 (1) (म) के अन्तर्गत परिणित होने के कारण भूमिधारक या कृषक के द्वारा किसी अन्य व्यक्ति से बतौर उपकृषक राहिन के रूप में कृषि कराने के लिए लगाये गये प्रतिबंध लागू नहीं होते हैं। वैसे भी नाबालिग के व्यापक हितों की सुरक्षा का दायित्व न्यायालय का है। यहीं नहीं राजस्थान काशतकारी अधिनियम 1955 की धारा 15 के तहत किसी भी व्यक्ति को मंदिर मूर्ति की भूमि पर खातेदारी अधिकार प्रदान</p>	

. तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज रेफरेन्स/एलआर/3078/2005/नागौर सरकार बनाम सोहनदास वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>नहीं किए जा सकते हैं।</p> <p>हस्तगत प्रकरण में माफी मंदिर मूर्ति की विवादित आराजी पर अप्रार्थीगण को बिना किसी सक्षम न्यायालय के आदेश/आज्ञा के अवैध रूप से खातेदार दर्ज कर दिया गया है, जिसे उपरोक्त वर्णित विभिन्न विधिक विनिश्चयों में प्रतिपादित सिद्धान्त के मद्देनजर निरस्त किया जाना न्यायोचित है।</p> <p>परिणामतः प्रस्तुत रेफरेंस स्वीकार किया जाकर ग्राम धानणी तहसील स्थित रेफरेंस प्रार्थना पत्र में उल्लेखित विवादित आराजियात बाबत अप्रार्थीगण के पक्ष में प्रदान की गयी खातेदारी को निरस्त किया जाता है। इसके साथ ही विवादित आराजियात को पुनः राजस्व रेकार्ड में माफी मंदिर श्रीरघुनाथजी के नाम खातेदारी में दर्ज किए जाने की आज्ञा पारित की जाती है।</p> <p>निर्णय खुले न्यायालय में सुनाया गया।</p> <p style="text-align: center;">(प्रवीण गुप्ता) सदस्य</p>	

. तारीख हुक्म	हुक्म या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज रेफरेन्स/एलआर/3078/2005/नागौर सरकार बनाम सोहनदास वगैरहा	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुक्म की तामील में जारी हुए

